'वापसी' के साथ वापस आने का तरीका.

(आजीविका को वापस लाना)

गूंज की प्रायोगिक और अभिनव पहल 'वापसी' के माध्यम से, हम आपदा प्रभावित, दूर-दराज के गांवों तक पहुंच चुके हैं और लगातार पहुंचना जारी रखे हैं। हमारी कोशिश अर्थव्यवस्था को फिर से जीवित करना और लोगों को स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बनाना है। वे जो जानते हैं और जो भी उनके पास है, उनकी बुद्धि, लक्ष्य और उनके कौशल का मूल्यांकन करके; क्षेत्र की जरूरतों का आकलन किया जाता है और काम के सम्मानजनक अवसर उन्हें दिए जाते हैं। यह उनको नुकसान के समय कुछ मूल्यवान चीजें प्रदान करता है। इसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण परिदृश्य में एक ऐसा सिस्टम बनाना है जो लोगों के सपनों का समर्थन करते हुए स्थानीय व्यवसायों को बढ़ावा देने में मदद करे। कोविद महामारी ने कई लोगों को विकट परिस्थितियों में धकेल दिया है। बहुत सारे दिहाड़ी मजदूरों, और अन्य समुदायों को इसके कारण नौकरियों से हाथ धोना पड़ा है साथ ही आय के दूसरे साधनों के नुकसान का भी नुकसान हुआ है। अब,पहले से कहीं अधिक लोगों का हाथ थामने और उनके सपनों का समर्थन करने की आवश्यकता है। इसी को ध्यान में रखते हुए, साल 2008 में बिहार में आई बाढ़ के बाद से ही ग्रामीण भारत में बड़े पैमाने पर 'वापसी' की शुरुआत की गई थी।

'वापसी' का जन्म

कब:

2008 में बिहार में आए कोसी बाढ़ के दौरान शुरू किया गया।

कैसे:

बाढ़ प्रभावित समुदायों की स्थिति को जांचा-परखा गया। उनके पारंपरिक व्यवसायों की पहचान की गई और फिर उनका समर्थन किया गया।

क्या:

मजदूरों, नाइयों, ढाबा मालिकों इत्यादि के लिए कम निवेश वाली व्यावसायिक किट तैयार की गईं।

और क्या:

हमारे प्रमुख 'डिग्निटी फॉर वर्क' (DFW) की पहल से प्रेरित इसकी शुरुआत से, स्थानीय अर्थव्यवस्था का पुनरुद्धार हुआ। इससे लोगों को प्रेरणा मिली और उन्होंने समाज को वापस भी दिया। उदाहरण के तौर पर एक नाई जिसे वापसी की किट मिली थी, उसने बच्चों के बाल मुफ्त में काटे।

मुख्य बिंदु:

साल 2008 में शुरू हुई 'वापसी' के जरिए करीब 20,000 लोगों तक पहुंचे।

अब तक कुल 32 व्यवसायों का समर्थन किया गया है।

कर्ज मुक्त जीवन की यात्रा

कौन:

बिहार की रहने वाली हंसा बाढ़ से पहले अत्यधिक गरीबी में रहती थी। उसे अपना गुजर-बसर करने और बीमार पति की देखभाल करने में कठिनाई हो रही थी।

कब:

कोसी बाढ़ के बाद।

क्या:

उनके जैसी दूसरी महिलाओं को तमोटपारसा में हमारे पहले केंद्र में सुजनी बनाने का प्रशिक्षण दिया गया था। यह कौशल, उसके और अन्य लोगों के लिए आजीविका के अवसर के रूप में विकसित हुआ। इसकी बदौलत उसे अपना कर्ज चुकाने और खुद के लिए एक अच्छा जीवन यापन करने का मौका मिला।

इसके अलावा:

ये केंद्र आलमनगर की तरह बिहार के अन्य हिस्सों में भी खुल गए हैं. जैसे ऋषिकेश, उत्तराखंड और पट्टाबीरामिन तमिलनाडु।

मुख्य बिंदु:

अप्रैल 2020 से लेकर 1,00,000 से अधिक सुजनी बनाई गईं।

100 से अधिक महिलाएं सुजनी मेकिंग सेंटरों में कार्यरत

वापसी किट

कैसे:

लोगों के कौशल और उनकी जरूरतों के आधार पर वह किट उन तक पहुंचाईं गई जो उनके व्यवसाय और सपनों का समर्थन करता है. इसके साथ ही ये किट उनकी आकांक्षाओं को पूरा करने में सक्षम है।

क्या:

व्यावसायिक किट, ये नाई की किट, इलेक्ट्रीशियन किट, छोटी जन सुविधा की दुकानें खोलने के लिए किट हो सकती हैं।

कब:

किसी भी आपदा के बाद और जरूरत पड़ने पर इन किटों को प्रभावित क्षेत्रों के समुदायों और व्यक्तियों तक पहुंचा दिया जाता है ताकि वे अपना काम जारी रख सकें और लंबे समय तक खुद को अपने पैरों पर खड़ा कर सकें.

कौन कौन:

अब तक हमने नाई, मोची, पंचर मरम्मत करने वाले, राजमिस्त्री, बिजली मिस्त्री, बढ़ई, वेल्डर, किसान, प्लंबर, पेंटर, चाय की दुकान के मालिक, ब्यूटीशियन, मनिहारी, मजदूर, ठेला मालिक, किराना व्यापारी, दर्जी, कैटरर, कारीगर, मछुआरे, हथकरघा का समर्थन किया है। बुनकर, साइकिल मरम्मत करने वाले, बकरी, सुअर, मुर्गी पालन करने वाले, फल और सब्जियों की दुकान के मालिक, जन सुविधा की दुकान, आभूषण बनाने वाले कलाकार, कैटरर, कारीगर, और फूड स्टॉल के मालिक जैसे और भी लोगों का समर्थन हमने किया है।

मुख्य बिंदु:

3,400 वापसी किट को वितरित किया गया

वापसी हाट

कैसे:

लोगों के लिए सामान खरीदने और बेचने के लिए गांवों के भीतर एक केंद्रीय जगह को चिन्हित कर उसे स्थापित करना।

क्या:

स्थानीय स्तर पर अस्थायी बाजार, जिन्हें हिंदी में हाट के रूप में जाना जाता है, स्थापित किए जाते हैं। यह ग्रामीण क्षेत्र में गतिविधियों का केंद्र है। नाई की दुकान, चाय की दुकानें और अन्य छोटे-छोटे व्यवसाय यहां होते हैं।

कब:

वे उन अधिकांश स्थानों की एक नियमित विशेषता बन गई हैं जहाँ इसकी पहल हुई थी।

और क्या:

छोटी-छोटी दुकानों ने समुदाय को बढ़ावा दिया है क्योंकि गूंज के सहयोग से अधिकांश नाई, मोची, मिठाई की दुकान के मालिक अपने कौशल का उपयोग करने के लिए एक साथ आते हैं, और जीवन को एक नई दिशा देते हैं।

मुख्य बिंदु:

अप्रैल 2020 से इन हाटों पर 200 से अधिक दुकानें स्थापित

सपने पूरा करना

कौन:

राजू पश्चिम बंगाल के शहीद नगर गांव में बड़े सपने के साथ रहने वाला एक बढ़ई है।

कब:

कोविड 19 महामारी के दौरान उसकी नौकरी चली गई, उनकी मां भी बीमार थीं। उसके पास पैसे के लिए एकमात्र विकल्प किसी और से उधार लेना था।

क्या:

अपनी खुद की बढ़ई की दुकान खोलने के सपने और दूर जाते देखते हुए उसने उम्मीद लगभग छोड़ दी थी। गूंज टीम के एक सदस्य ने सर्वेक्षण के दौरान उसकी कहानी सुनी और उसे बढ़ई की किट दी। वह अब अपने सपने को साकार करने के करीब है, अपने पैरों पर खड़ा है और अपने परिवार का भरण पोषण कर रहा है। उनकी मां के मुताबिक उन्होंने अपने भविष्य के लिए अब बचत भी करना शुरू कर दिया है

इसके अलावा:

लोगों को अपने शिल्प के माध्यम से खुद को व्यक्त करने का अवसर देना बेहद खूबसूरत एहसास है। हमने जिन अन्य सपनों का समर्थन किया है, वो हैं ब्यूटीशियन, टेलर्स, कैटरर्स, फिश फार्मर्स, आर्टिस्ट, और भी बहुत कुछ।

मुख्य बिंदु:

290 से अधिक बढ़ई किट दिए गये अप्रैल 2020 से

भोजनालय व्यवसाय को समर्थन प्रदान किया

कौन

-कोट्टायम, केरल से 3 दोस्त और व्यापार में साझेदार सिंधु, सैंथम्मा एवं गीतांजलि।

कब-2018 में वहां आई बाढ़ के बाद।

क्या- वे शादियों में खाना परोसने वाली छोटी कैटरिंग कंपनी चलाते थे। उनका व्यवसाय इस आपदा के बाद से ही ठप हो गया था। वापसी के तहत इन महिलाओं को इडियप्पम ढांचा उपलब्ध कराया गया जिससे कि उनके व्यवसाय में सहयोग किया जा सके। इससे उन्हें आगे बढ़ने में मदद मिली है और अब वे फल-फूल रही हैं।

इसके अलावा

-भविष्य में अपने स्वादिष्ट इडियप्पम को यह लोग पास की दुकानों और छात्रावास में पहुंचाना चाहते हैं। इसके अलावा सैंथम्मा ने गाड़ी चलाना सीख लिया है और गीतांजलि अपनी बेटी के नर्सिंग स्कूल के सपनों को अपनी आय के माध्यम से पूरा कर रही हैं।

कोविड के दौरान 'वापसी'

कैसे-

कोविड के दौरान बदली हुई जरूरतों को समझते हुए काम को और आगे बढ़ाने के लिए इस पहल को फिर से शुरू किया गया।

कब-

पिछले साल हम दर्जियों के पास गए और उन्हें गनी बैग और मास्क बनाने के लिए प्रेरित किया जिसकी उस समय जरूरत भी थी। इसी साल पूरे देश में खिचड़ी ढाबों के माध्यम से नए व्यवसाय के अवसर प्रस्तुत किए गए।

क्या-

बोरियों व मास्क का उपयोग पूरे भारत में राहत सामग्री को भेजने के लिए किया जाता था।

खिचड़ी ढाबे अब एक ऐसी जगह है जहां लोग कम कीमत पर या फिर मुफ्त में भोजन के लिए आते हैं।

इसके अलावा -

भोजनालयों ने कई लोगों के लिए खाने की कमी को पूरा किया है। इसके अलावा बहुत छोटे व्यवसाय जैसे फुटवियर, अचार ,अगरबत्ती आदि की उत्पादन इकाइयों को अन्य उत्पादों के साथ समर्थन दिया गया है।

पल्ला सेना के नारियल वृक्षारोही।

कौन-पलक्कड़ केरल के तीन नारियल वृक्षारोही।

कब- महामारी के दौरान।

क्या-

सज्जन ने नारियल इकट्ठा करने के लिए पेड़ों पर चढ़ने की अपनी 30 साल पुरानी तकनीकों को और बेहतर करने की इच्छा व्यक्त की। पुरानी तौर तरीकों से काम करने से हाथ पैरों में दर्द और मांसपेशियों व त्वचा में जकड़न आदि होती थी। नारियल पर चढ़ने वाली मशीन इस काम को करने के लिए आसान, सुरक्षित और अधिक लाभदायक उपकरण के तौर पर देखा गया।

इसके अलावा-

यह नारियल तोड़नेवालों के लिए आर्थिक रूप से बहुत फायदेमंद साबित हुआ है और इस क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधनों के माध्यम से आर्थिक रुप से सशक्त और समृद्ध बनाने की कोशिश रही।

- **<u>कार्यक्षेत्र से जानकारी:</u>**

प्राथमिक सहयोग	**अप्रैल 20 से मार्च 21**	**अप्रैल 21 से जुलाई 21**	**कुल**
राशन और अन्य आवश्यक सामग्री पहुंचाई गयी।	9.4+ **मिलियन**	3.8+ **मिलियन**	13.20+ **मिलियन किलो**
परिवारों तक पहुंच.	445,000	90,000+	540,000+
तैयार भोजन वितरित किया गया।	360,000+	85,000+	445,000
स्वास्थ्य रक्षा संबंधित पहल			
फेस मास्क	875,000	540,000	1.32 **मिलियन**
सैनिटरी नैपकिन	1,300,000+	445,000	1.60+ **मिलियन**

साझेदारी			
संगठन जिन के साथ हम कार्य कर रहे हैं। राज्य जिनमें हम कार्य कर रहे हैं।	500+ 27	400+ 22	
किसानो से सीधे तौर से फल और सब्जियां खरीदी गईं।	225,000+	90,000+	315,000+ **किलो**
डिग्निटी फॉर वर्क (DFW) परियोजनाएं |	10,500+		
सब्जी बागान लगाए गए जलसंसाधन सहयोग तालाब नहर निजीस्नानगर, एवं शौचालयों का निर्माण किया गया।	1,500+ 450+ 870+ 1130+	8 40+ 20+ 7	1508+ 490+ 890+ 1137+

- **चिकित्सा के क्षेत्र में**
  - 20 अलोन सेंटर (स्वास्थ्य देखभाल केन्द्र)

- 90,000+ परिवारों तक दवाइयों की किट पहुंचाई गई।
- 14,000+ स्वास्थ्य देखभाल कार्यकर्ताओं को किट प्रदान की गई।
- 32,000+ पी. पी. ई किट, ऑक्सीजन सिलेंडर/ सानद्रक

हमारा साथ दें:

- सामग्री सहयोग के रूप में - https://bit.ly/2yR000h
- राशि से सहयोग के लिये- goonj.org/donate
- गूँज के लिए फण्डरेजिंग कैंपेन शुरू करने के लिए हमे jibin@goonj.org पर लिखें।

- **पिछली डिग्निटी डायरी** को पढ़ने के लिए यहां क्लिक करें: http://bit.ly/2K1JH3e

संपर्क करें :

मुख्यालय : J-93, सरिता विहार, नईदिल्ली - 76

011-26972351/41401216

www.goonj.org

mail@goonj.org